पर्यटन का अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों का विश्लेषण

डॉ0 मनुजेन्द्र कुमार

माध्यमिक शिक्षक, जिला स्कूल, भागलपुर (बिहार)

शोध-सार

पर्यटन आधुनिक वैश्विक अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण घटक बन चुका है, जो किसी भी देश के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास में उल्लेखनीय भूमिका निभाता है। पर्यटन का तात्पर्य लोगों के अपने निवास स्थान से बाहर विभिन्न उद्देश्यों जैसे मनोरंजन, शिक्षा, व्यापार, धर्म अथवा स्वास्थ्य के लिए अस्थायी रूप से यात्रा करने से है। यह गतिविधि केवल अवकाश तक सीमित न होकर एक संगठित उद्योग के रूप में विकसित हो चुकी है, जिसका प्रभाव अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों रूपों में परिलक्षित होता है। प्रस्तुत सार में पर्यटन के इन्हीं प्रभावों का विश्लेषण किया गया है। पर्यटन का सबसे प्रमुख सकारात्मक प्रभाव रोजगार सृजन के रूप में देखा जाता है। होटल, परिवहन, रेस्तरां, ट्रैवल एजेंसियाँ, हस्तशिल्प, स्थानीय बाजार और मार्गदर्शक सेवाएँ प्रत्यक्ष रूप से पर्यटन पर निर्भर होती हैं। इससे कुशल, अर्द्ध-कुशल और अकुशल श्रमिकों के लिए व्यापक रोजगार अवसर उत्पन्न होते हैं। इसके अतिरिक्त पर्यटन विदेशी मुद्रा अर्जन का एक महत्वपूर्ण स्रोत है, जो भुगतान संतुलन को सुदृढ़ करता है और राष्ट्रीय आय में वृद्धि करता है। पर्यटन के कारण बुनियादी ढाँचे जैसे सड़क, हवाई अड्डे, संचार व्यवस्था और स्वच्छता सुविधाओं का विकास होता है, जिसका लाभ स्थानीय जनता को भी प्राप्त होता है। ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में पर्यटन स्थानीय संसाधनों के उपयोग को बढ़ावा देता है, जिससे क्षेत्रीय असमानता कम होती है और समावेशी आर्थिक विकास संभव होता है। हालाँकि, पर्यटन के नकारात्मक आर्थिक प्रभावों की भी अनदेखी नहीं की जा सकती। अत्यधिक पर्यटन के कारण स्थानीय बाजारों में महँगाई बढ़ जाती है, जिससे आवश्यक वस्तुएँ स्थानीय निवासियों की पहुँच से बाहर हो सकती हैं। भूमि और आवास की कीमतों में वृद्धि से सामाजिक असंतोष उत्पन्न होता है। पर्यटन पर अत्यधिक निर्भरता अर्थव्यवस्था को अस्थिर भी बना सकती है, क्योंकि प्राकृतिक आपदाओं, महामारी, राजनीतिक अस्थिरता या वैश्विक मंदी के समय पर्यटन उद्योग सबसे पहले प्रभावित होता है। इसके अतिरिक्त, पर्यावरणीय क्षरण जैसे प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन, प्रदूषण और पारिस्थितिक असंतुलन दीर्घकालीन आर्थिक विकास के लिए गंभीर चुनौती बन सकता है।

अतः स्पष्ट है कि पर्यटन एक दोधारी तलवार के समान है। यदि इसे योजनाबद्ध, संतुलित और सतत दृष्टिकोण के साथ विकसित किया जाए, तो यह आर्थिक समृद्धि, रोजगार और क्षेत्रीय विकास का सशक्त माध्यम बन सकता है। वहीं, यदि इसके नकारात्मक प्रभावों पर नियंत्रण न रखा जाए, तो यह आर्थिक असमानता और पर्यावरणीय संकट को जन्म दे सकता है। इसलिए सतत पर्यटन नीतियों को अपनाना समय की आवश्यकता है, जिससे पर्यटन के सकारात्मक प्रभावों को अधिकतम और नकारात्मक प्रभावों को न्यूनतम किया जा सके।

शब्दकुंजी: सकारात्मक प्रभाव, नकारात्मक प्रभाव, आर्थिक समृद्धि, रोजगार और क्षेत्रीय विकास आदि

भूमिका:

पर्यटन आधुनिक विश्व की एक महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि है, जो न केवल लोगों के मनोरंजन और अवकाश से जुड़ी है, बल्कि किसी भी देश की अर्थव्यवस्था के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पर्यटन का अर्थ है किसी व्यक्ति का अपने निवास स्थान से बाहर किसी अन्य स्थान पर भ्रमण के उद्देश्य से जाना, चाहे वह उद्देश्य मनोरंजन, शिक्षा, व्यापार, धर्म, स्वास्थ्य या सांस्कृतिक आदान-प्रदान ही क्यों न हो। पर्यटन उद्योग आज वैश्विक अर्थव्यवस्था का एक सशक्त स्तंभ बन चुका है और इससे प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से करोड़ों लोगों को रोजगार प्राप्त होता है। पर्यटन और अर्थव्यवस्था का संबंध अत्यंत गहरा और बहुआयामी है। जब कोई पर्यटक किसी स्थान पर जाता है, तो वह वहाँ आवास, भोजन, परिवहन, खरीदारी और मनोरंजन जैसी अनेक सेवाओं पर खर्च करता है। यह खर्च स्थानीय अर्थव्यवस्था में धन के प्रवाह को बढ़ाता है, जिससे व्यापारिक गतिविधियाँ तेज होती हैं। इस प्रकार पर्यटन एक ऐसा क्षेत्र है जो मांग और आपूर्ति दोनों को संतुलित करते हुए आर्थिक विकास को गति प्रदान करता है। पर्यटन का सबसे प्रमुख आर्थिक प्रभाव रोजगार सृजन के रूप में दिखाई देता है। होटल, रेस्तरां, ट्रैवल एजेंसियाँ, परिवहन सेवाएँ, हस्तशिल्प उद्योग, गाइड सेवाएँ और मनोरंजन उद्योग जैसे अनेक क्षेत्र पर्यटन पर निर्भर होते हैं। इन क्षेत्रों में कुशल, अर्ध-कुशल और अकुशल सभी प्रकार के श्रमिकों के लिए रोजगार के अवसर उपलब्ध होते हैं। विशेष रूप से विकासशील देशों में पर्यटन बेरोजगारी कम करने का एक प्रभावी साधन सिद्ध हुआ है। पर्यटन से प्राप्त आय किसी भी देश की राष्ट्रीय आय में महत्वपूर्ण योगदान देती है। विदेशी पर्यटकों के आगमन से विदेशी मुद्रा की प्राप्ति होती है, जिससे भुगतान संतुलन मजबूत होता है। भारत जैसे देश में पर्यटन

विदेशी मुद्रा अर्जन का एक प्रमुख स्रोत है। विदेशी मुद्रा भंडार बढ़ने से देश की आर्थिक स्थिरता में वृद्धि होती है और आयात-निर्यात को संतुलित करने में सहायता मिलती है। पर्यटन क्षेत्र बुनियादी ढांचे के विकास को भी प्रोत्साहित करता है। पर्यटकों की सुविधा के लिए सड़कें, रेलवे, हवाई अड्डे, होटल, संचार व्यवस्था और स्वच्छता सुविधाओं का विकास किया जाता है। इन सुविधाओं का लाभ न केवल पर्यटकों को मिलता है, बल्कि स्थानीय नागरिकों को भी होता है। इस प्रकार पर्यटन अप्रत्यक्ष रूप से समग्र क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देता है। पर्यटन का प्रभाव ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। ग्रामीण और दूरदराज क्षेत्रों में स्थित प्राकृतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक स्थल पर्यटन को आकर्षित करते हैं। इससे स्थानीय लोगों को होमस्टे, हस्तशिल्प, स्थानीय भोजन और मार्गदर्शक सेवाओं के माध्यम से आय प्राप्त होती है। ग्रामीण पर्यटन से पलायन की समस्या कम होती है और स्थानीय संसाधनों का बेहतर उपयोग संभव हो पाता है। पर्यटन छोटे और मध्यम उद्योगों के विकास में सहायक होता है। स्थानीय स्तर पर हस्तशिल्प, स्मृति-चिह्न, वस्त्र, खाद्य उत्पाद और सांस्कृतिक वस्तुओं की मांग बढ़ती है। इससे कुटीर और लघु उद्योगों को प्रोत्साहन मिलता है, जो अर्थव्यवस्था की रीढ़ माने जाते हैं। इन उद्योगों के माध्यम से स्थानीय कौशल और परंपराओं का संरक्षण भी होता है। पर्यटन का एक महत्वपूर्ण आर्थिक प्रभाव कर राजस्व के रूप में भी सामने आता है। होटल कर, परिवहन कर, प्रवेश शुल्क, सेवा कर और वस्तु एवं सेवा कर (GST) के माध्यम से सरकार को पर्याप्त राजस्व प्राप्त होता है। इस राजस्व का उपयोग सरकार शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक कल्याण और बुनियादी सेवाओं के विकास में कर सकती है। इस प्रकार पर्यटन सरकारी वित्त को सुदृढ़ करता है। पर्यटन अंतरराष्ट्रीय व्यापार और निवेश को भी बढ़ावा देता है। जब किसी देश की पर्यटन छवि मजबूत होती है, तो विदेशी निवेशकों का विश्वास बढ़ता है। होटल श्रृंखलाएँ, एयरलाइंस और ट्रैवल कंपनियाँ निवेश के नए अवसर तलाशती हैं। इससे पूंजी निवेश बढ़ता है और आर्थिक गतिविधियों में विविधता आती है। पर्यटन का प्रभाव सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था पर भी पड़ता है। सांस्कृतिक उत्सव, मेले, नृत्य, संगीत और पारंपरिक कलाएँ पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। इससे कलाकारों और सांस्कृतिक कर्मियों को आय के अवसर मिलते हैं। सांस्कृतिक पर्यटन के माध्यम से स्थानीय पहचान को वैश्विक मंच मिलता है, जिससे सांस्कृतिक विरासत आर्थिक संपत्ति में परिवर्तित हो जाती है। हालाँकि पर्यटन के अनेक सकारात्मक आर्थिक प्रभाव हैं, फिर भी इसके कुछ नकारात्मक पहलू भी हैं। अत्यधिक पर्यटन से महँगाई बढ़ सकती है, जिससे स्थानीय लोगों के लिए जीवन यापन कठिन हो जाता है। भूमि और आवास की कीमतों में वृद्धि, प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव और पर्यावरणीय क्षति जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं, जो दीर्घकालीन आर्थिक स्थिरता के लिए चुनौती बनती हैं। पर्यटन पर अत्यधिक निर्भरता भी अर्थव्यवस्था के लिए जोखिमपूर्ण हो सकती है। प्राकृतिक आपदाएँ, महामारी, राजनीतिक अस्थिरता या वैश्विक मंदी जैसी परिस्थितियों में पर्यटन उद्योग सबसे अधिक प्रभावित होता है। कोविड-19 महामारी के दौरान यह स्पष्ट रूप से देखा गया कि पर्यटन पर निर्भर अर्थव्यवस्थाओं को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ा। इसलिए सतत पर्यटन की अवधारणा को अपनाना आवश्यक है। सतत पर्यटन का उद्देश्य आर्थिक लाभ के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक संतुलन बनाए रखना है। यदि पर्यटन योजनाबद्ध और जिम्मेदारीपूर्ण तरीके से विकसित किया जाए, तो यह दीर्घकाल तक अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाए रख सकता है। सरकार की भूमिका पर्यटन के आर्थिक प्रभाव को अधिकतम करने में अत्यंत महत्वपूर्ण है। उचित नीतियाँ, निवेश प्रोत्साहन, कौशल विकास कार्यक्रम और स्थानीय समुदाय की भागीदारी से पर्यटन को समावेशी विकास का माध्यम बनाया जा सकता है। सार्वजनिक-निजी भागीदारी के माध्यम से पर्यटन ढांचे का सुदृढ़ीकरण संभव है। शिक्षा और प्रशिक्षण के माध्यम से पर्यटन से जुड़े मानव संसाधन को दक्ष बनाना भी आवश्यक है। प्रशिक्षित गाइड, होटल प्रबंधन, भाषा विशेषज्ञ और सेवा कर्मी पर्यटन अनुभव को बेहतर बनाते हैं, जिससे पर्यटकों की संतुष्टि बढ़ती है और पुनः आगमन की संभावना बनती है। इसका सीधा सकारात्मक प्रभाव अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। डिजिटल तकनीक और पर्यटन का संबंध भी आज के समय में अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है। ऑनलाइन बुकिंग, डिजिटल भुगतान, वर्चुअल टूर और सोशल मीडिया प्रचार से पर्यटन व्यवसाय को नई दिशा मिली है। इससे लागत कम होती है, बाजार का विस्तार होता है और आर्थिक लाभ में वृद्धि होती है। अंततः यह कहा जा सकता है कि पर्यटन अर्थव्यवस्था के विकास का एक शक्तिशाली माध्यम है। यह रोजगार सृजन, आय वृद्धि, विदेशी मुद्रा अर्जन, क्षेत्रीय विकास और सांस्कृतिक संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान देता है। यदि इसके नकारात्मक प्रभावों को नियंत्रित करते हुए संतुलित और सतत दृष्टिकोण अपनाया जाए, तो पर्यटन किसी भी देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ और आत्मनिर्भर बनाने में निर्णायक भूमिका निभा सकता है।

पर्यटन का अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव :

पर्यटन आज विश्व की सबसे तीव्र गति से विकसित होने वाली आर्थिक गतिविधियों में से एक है। यह केवल मनोरंजन या अवकाश का साधन नहीं रह गया है, बल्कि एक संगठित उद्योग के रूप में उभर चुका है, जो किसी भी देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पर्यटन का अर्थ है लोगों का अपने स्थायी निवास स्थान से बाहर अस्थायी रूप से यात्रा करना, चाहे उद्देश्य मनोरंजन, शिक्षा, व्यापार, स्वास्थ्य या धार्मिक ही क्यों न हो। इस गतिविधि से उत्पन्न आर्थिक लाभ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में दिखाई देते हैं, जो राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और स्थानीय स्तर पर विकास को गति प्रदान करते हैं।

पर्यटन का सबसे महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव रोजगार सृजन के रूप में सामने आता है। पर्यटन उद्योग से जुड़े क्षेत्रों जैसे होटल, रेस्तरां, परिवहन, ट्रैवल एजेंसियाँ, गाइड सेवाएँ, हस्तशिल्प और मनोरंजन उद्योग में बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार मिलता है। यह क्षेत्र श्रम-प्रधान होने के कारण अधिक पूंजी निवेश के बिना भी व्यापक रोजगार उपलब्ध कराता है। विशेष रूप से विकासशील देशों में पर्यटन बेरोजगारी कम करने और लोगों को आय के स्थायी साधन प्रदान करने में सहायक सिद्ध हुआ है।

पर्यटन से राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है। पर्यटक जिस भी स्थान पर जाते हैं, वहाँ आवास, भोजन, यात्रा, खरीदारी और मनोरंजन पर खर्च करते हैं। यह खर्च स्थानीय बाजारों में धन के प्रवाह को बढ़ाता है, जिससे व्यापारिक गतिविधियाँ सशक्त होती हैं। विदेशी पर्यटकों के आगमन से विदेशी मुद्रा अर्जित होती है, जिससे देश का भुगतान संतुलन मजबूत होता है। भारत जैसे देशों में पर्यटन विदेशी मुद्रा अर्जन का एक प्रमुख स्रोत बन चुका है, जो आर्थिक स्थिरता को बनाए रखने में सहायक है। पर्यटन बुनियादी ढाँचे के विकास को भी प्रोत्साहित करता है। पर्यटकों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए सरकार और निजी क्षेत्र सड़क, रेलवे, हवाई अड्डे, होटल, संचार व्यवस्था, जल-विद्युत और स्वच्छता सुविधाओं में निवेश करते हैं। इन सुविधाओं का लाभ केवल पर्यटकों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि स्थानीय निवासियों के जीवन स्तर में भी सुधार होता है। इस प्रकार पर्यटन समग्र क्षेत्रीय विकास का आधार बनता है। ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों के विकास में पर्यटन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्राकृतिक सौंदर्य, सांस्कृतिक विरासत और धार्मिक स्थलों से युक्त ग्रामीण क्षेत्र पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। ग्रामीण पर्यटन से स्थानीय लोगों को होमस्टे, स्थानीय भोजन, हस्तशिल्प और परिवहन सेवाओं के माध्यम से आय प्राप्त होती है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर होने वाले पलायन में कमी आती है और स्थानीय संसाधनों का सतत उपयोग संभव होता है।

पर्यटन छोटे और मध्यम उद्योगों के विकास को बढ़ावा देता है। पर्यटकों की मांग के कारण स्थानीय स्तर पर हस्तशिल्प, पारंपरिक वस्त्र, स्मृति-चिह्न, खाद्य उत्पाद और सांस्कृतिक वस्तुओं का उत्पादन बढ़ता है। इससे कुटीर और लघु उद्योगों को प्रोत्साहन मिलता है, जो अर्थव्यवस्था की रीढ़ माने जाते हैं। इन उद्योगों के माध्यम से स्थानीय कौशल, परंपराएँ और सांस्कृतिक पहचान संरक्षित रहती हैं। पर्यटन सरकार के लिए राजस्व का एक महत्वपूर्ण स्रोत भी है। होटल कर, परिवहन कर, प्रवेश शुल्क, सेवा कर और वस्तु एवं सेवा कर (GST) के माध्यम से सरकार को पर्याप्त आय प्राप्त होती है। इस राजस्व का उपयोग शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक कल्याण और सार्वजनिक सेवाओं के विस्तार में किया जा सकता है। इस प्रकार पर्यटन न केवल निजी क्षेत्र बल्कि सार्वजनिक वित्त को भी सुदृढ़ करता है। पर्यटन अंतरराष्ट्रीय निवेश और व्यापार को आकर्षित करता है। जब किसी देश या क्षेत्र की पर्यटन छवि सुदृढ़ होती है, तो विदेशी निवेशकों का विश्वास बढ़ता है। होटल श्रृंखलाएँ, एयरलाइंस और ट्रैवल कंपनियाँ निवेश के नए अवसर तलाशती हैं। इससे पूंजी प्रवाह बढ़ता है और अर्थव्यवस्था में विविधता आती है। साथ ही, अंतरराष्ट्रीय संपर्कों के माध्यम से व्यापारिक संबंध भी मजबूत होते हैं। पर्यटन सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था को भी सशक्त बनाता है। सांस्कृतिक उत्सव, मेले, नृत्य, संगीत और पारंपरिक कलाएँ पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। इससे कलाकारों, शिल्पकारों और सांस्कृतिक कर्मियों को आय के नए अवसर प्राप्त होते हैं। सांस्कृतिक विरासत आर्थिक संपत्ति में परिवर्तित होकर स्थानीय समुदाय की आजीविका को सुदृढ़ करती है।

अतः कहा जा सकता है कि पर्यटन अर्थव्यवस्था पर बहुआयामी सकारात्मक प्रभाव डालता है। यह रोजगार सृजन, आय वृद्धि, विदेशी मुद्रा अर्जन, बुनियादी ढाँचे के विकास, ग्रामीण उत्थान और सांस्कृतिक संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान देता है। यदि पर्यटन का विकास योजनाबद्ध और सतत रूप से किया जाए, तो यह किसी भी देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत, समावेशी और आत्मनिर्भर बनाने का एक प्रभावी साधन सिद्ध हो सकता है।

पर्यटन का अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव :

पर्यटन को प्रायः आर्थिक विकास का एक प्रभावी साधन माना जाता है, किंतु इसके सकारात्मक पहलुओं के साथ-साथ कई नकारात्मक आर्थिक प्रभाव भी जुड़े हुए हैं। यदि पर्यटन का विकास संतुलित और योजनाबद्ध ढंग से न किया जाए, तो यह स्थानीय अर्थव्यवस्था, समाज और पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है। विशेष रूप से विकासशील देशों और संवेदनशील पर्यटन स्थलों में पर्यटन के दुष्प्रभाव अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। इसलिए पर्यटन के नकारात्मक आर्थिक प्रभावों का विश्लेषण करना आवश्यक हो जाता है।

पर्यटन का एक प्रमुख नकारात्मक प्रभाव स्थानीय महँगाई में वृद्धि के रूप में सामने आता है। जब किसी क्षेत्र में पर्यटकों की संख्या बढ़ती है, तो आवास, भोजन, परिवहन और दैनिक उपयोग की वस्तुओं की मांग बढ़ जाती है। मांग बढ़ने से कीमतों में वृद्धि होती है, जिसका सीधा असर स्थानीय निवासियों पर पड़ता है। कई बार आवश्यक वस्तुएँ स्थानीय लोगों की क्रय-शक्ति से बाहर हो जाती हैं, जिससे जीवन यापन की लागत बढ़ जाती है और आर्थिक असंतोष उत्पन्न होता है। भूमि और आवास की कीमतों में वृद्धि भी पर्यटन का एक गंभीर नकारात्मक प्रभाव है। लोकप्रिय पर्यटन स्थलों पर होटल, रिसॉर्ट और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के निर्माण के कारण भूमि की मांग

तेजी से बढ़ती है। इससे भूमि और मकानों की कीमतें बढ़ जाती हैं, जिसके परिणामस्वरूप स्थानीय लोग अपने ही क्षेत्र में आवास प्राप्त करने में असमर्थ हो जाते हैं। कई स्थानों पर स्थानीय निवासियों को विस्थापन का सामना करना पड़ता है, जिससे सामाजिक और आर्थिक अस्थिरता बढ़ती है।

पर्यटन पर अत्यधिक निर्भरता अर्थव्यवस्था को असुरक्षित बना देती है। जिन क्षेत्रों या देशों की अर्थव्यवस्था मुख्यतः पर्यटन पर आधारित होती है, वे प्राकृतिक आपदाओं, राजनीतिक अस्थिरता, आतंकवाद या वैश्विक महामारियों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हो जाते हैं। कोविड-19 महामारी इसका स्पष्ट उदाहरण है, जब पर्यटन उद्योग लगभग ठप हो गया और लाखों लोग बेरोजगार हो गए। ऐसी स्थिति में पर्यटन-आधारित अर्थव्यवस्थाओं को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ा। पर्यटन से होने वाला आर्थिक लाभ अक्सर समान रूप से वितरित नहीं होता। बड़े होटल, बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ और बाहरी निवेशक पर्यटन से होने वाले अधिकांश लाभ पर नियंत्रण रखते हैं, जबकि स्थानीय समुदाय को सीमित लाभ ही प्राप्त होता है। इससे आय असमानता बढ़ती है और स्थानीय लोगों में आर्थिक असंतोष उत्पन्न होता है। कई बार स्थानीय श्रमिकों को कम वेतन और अस्थायी रोजगार तक ही सीमित रहना पड़ता है।

पर्यटन का नकारात्मक प्रभाव पारंपरिक व्यवसायों और स्थानीय अर्थव्यवस्था पर भी पड़ता है। पर्यटन की बढ़ती मांग के कारण स्थानीय लोग कृषि, मछली पालन या पारंपरिक शिल्प जैसे व्यवसायों को छोड़कर पर्यटन से जुड़े कार्यों में लग जाते हैं। इससे पारंपरिक आर्थिक गतिविधियाँ कमजोर हो जाती हैं और अर्थव्यवस्था का संतुलन बिगड़ता है। दीर्घकाल में यह आर्थिक संरचना को अस्थिर बना सकता है। पर्यावरणीय क्षरण भी पर्यटन से जुड़ा एक महत्वपूर्ण नकारात्मक आर्थिक प्रभाव है। अत्यधिक पर्यटकों के कारण प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन होता है, जैसे जल, वन और ऊर्जा संसाधन। प्रदूषण, कचरा प्रबंधन की समस्या और प्राकृतिक सौंदर्य का ह्रास पर्यटन स्थलों की दीर्घकालीन आर्थिक क्षमता को कम कर देता है। जब पर्यावरणीय गुणवत्ता घटती है, तो पर्यटन आकर्षण भी कम हो जाता है, जिससे भविष्य की आय प्रभावित होती है। पर्यटन से जुड़ी मौसमी प्रकृति भी आर्थिक अस्थिरता का कारण बनती है। कई पर्यटन स्थल वर्ष के कुछ विशेष महीनों में ही पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। शेष समय में पर्यटन गतिविधियाँ कम हो जाती हैं, जिससे रोजगार और आय में अनिश्चितता बनी रहती है। मौसमी बेरोजगारी स्थानीय अर्थव्यवस्था के लिए एक गंभीर समस्या बन जाती है।

सरकारी संसाधनों पर बढ़ता दबाव भी पर्यटन का एक नकारात्मक पहलू है। पर्यटकों की सुविधा के लिए सरकार को सुरक्षा, स्वच्छता, परिवहन और स्वास्थ्य सेवाओं पर अतिरिक्त व्यय करना पड़ता है। यदि पर्यटन से प्राप्त राजस्व इन खर्चों की भरपाई नहीं कर पाता, तो सरकारी वित्त पर बोझ बढ़ता है। इससे अन्य विकासात्मक क्षेत्रों के लिए संसाधनों की कमी हो सकती है। पर्यटन से सांस्कृतिक व्यवसायीकरण भी होता है, जिसका आर्थिक प्रभाव नकारात्मक हो सकता है। स्थानीय संस्कृति, परंपराएँ और उत्सव केवल पर्यटकों को आकर्षित करने के साधन बन जाते हैं। इससे उनकी मौलिकता और सामाजिक महत्व कम हो जाता है। दीर्घकाल में सांस्कृतिक क्षरण पर्यटन की गुणवत्ता को प्रभावित करता है, जिससे आर्थिक लाभ में भी कमी आ सकती है।

अतः कहा जा सकता है कि पर्यटन के नकारात्मक आर्थिक प्रभाव बहुआयामी और दीर्घकालीन हो सकते हैं। यदि पर्यटन का विकास अनियंत्रित और असंतुलित ढंग से किया जाए, तो यह महँगाई, असमानता, पर्यावरणीय क्षति और आर्थिक अस्थिरता को जन्म दे सकता है। इसलिए आवश्यक है कि पर्यटन नीतियाँ बनाते समय स्थानीय समुदाय, पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक विविधीकरण पर विशेष ध्यान दिया जाए, ताकि पर्यटन के दुष्प्रभावों को नियंत्रित किया जा सके और संतुलित आर्थिक विकास सुनिश्चित हो सके।

निष्कर्ष :

पर्यटन आधुनिक अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण और गतिशील घटक बन चुका है, जिसने वैश्विक तथा राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक विकास की दिशा और गति दोनों को प्रभावित किया है। आज पर्यटन केवल भ्रमण और मनोरंजन तक सीमित न रहकर एक संगठित उद्योग के रूप में विकसित हो गया है, जो रोजगार सृजन, आय वृद्धि, विदेशी मुद्रा अर्जन और क्षेत्रीय विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है। साथ ही, इसके कुछ नकारात्मक आर्थिक प्रभाव भी हैं, जिन्हें अनदेखा नहीं किया जा सकता। इसलिए पर्यटन के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं को समग्र दृष्टिकोण से समझना आवश्यक है, ताकि संतुलित और सतत आर्थिक विकास सुनिश्चित किया जा सके। पर्यटन के सकारात्मक प्रभावों की बात करें तो यह स्पष्ट रूप से रोजगार सृजन का एक सशक्त माध्यम है। पर्यटन उद्योग से जुड़े होटल, परिवहन, रेस्तरां, ट्रैवल एजेंसियाँ, हस्तशिल्प, स्थानीय बाजार और सेवा क्षेत्र लाखों लोगों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्रदान करते हैं। विशेष रूप से विकासशील देशों में, जहाँ औद्योगिक अवसर सीमित होते हैं, पर्यटन बेरोजगारी को कम करने और लोगों की आय बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके माध्यम से कुशल, अर्ध-कुशल और अकुशल सभी वर्गों के लिए आजीविका के अवसर उत्पन्न होते हैं।

पर्यटन राष्ट्रीय आय और विदेशी मुद्रा अर्जन का भी एक प्रमुख स्रोत है। विदेशी पर्यटकों के आगमन से देश में विदेशी मुद्रा का प्रवाह बढ़ता है, जिससे भुगतान संतुलन मजबूत होता है और आर्थिक स्थिरता बनी रहती है। इसके अतिरिक्त, पर्यटकों द्वारा किया गया व्यय स्थानीय बाजारों में मांग को बढ़ाता है, जिससे व्यापारिक गतिविधियाँ सशक्त होती हैं और आर्थिक चक्र को गति मिलती है। पर्यटन के कारण बुनियादी ढाँचे जैसे सड़कें, हवाई अड्डे, संचार व्यवस्था और स्वच्छता सुविधाएँ का विकास होता है, जिसका लाभ दीर्घकाल में संपूर्ण समाज को प्राप्त होता है। ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों के विकास में भी पर्यटन का योगदान उल्लेखनीय है। प्राकृतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक पर्यटन स्थलों के माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई पहचान मिलती है। इससे स्थानीय संसाधनों का बेहतर उपयोग होता है, पलायन की समस्या कम होती है और क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने में सहायता मिलती है। साथ ही, पर्यटन छोटे और मध्यम उद्योगों, कुटीर उद्योगों और हस्तशिल्प को प्रोत्साहन देकर स्थानीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करता है। पर्यटन के नकारात्मक आर्थिक प्रभाव भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। अत्यधिक पर्यटन के कारण स्थानीय महँगाई में वृद्धि होती है, जिससे आवश्यक वस्तुएँ और सेवाएँ स्थानीय निवासियों की पहुँच से बाहर हो जाती हैं। भूमि और आवास की कीमतों में बढ़ोतरी के कारण सामाजिक असंतोष और विस्थापन की समस्या उत्पन्न होती है। इसके अतिरिक्त, पर्यटन पर अत्यधिक निर्भरता अर्थव्यवस्था को अस्थिर बना सकती है, क्योंकि प्राकृतिक आपदाओं, राजनीतिक अस्थिरता या वैश्विक महामारियों जैसी परिस्थितियों में पर्यटन उद्योग सबसे पहले प्रभावित होता है।

पर्यटन से होने वाला आर्थिक लाभ अक्सर असमान रूप से वितरित होता है। बड़े व्यवसाय और बाहरी निवेशक अधिक लाभ अर्जित करते हैं, जबकि स्थानीय समुदाय को सीमित और अस्थायी रोजगार ही प्राप्त होता है। इससे आय असमानता बढ़ती है और सामाजिक-आर्थिक तनाव उत्पन्न होता है। पर्यावरणीय क्षरण भी पर्यटन से जुड़ा एक गंभीर मुद्दा है, क्योंकि प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन और प्रदूषण से पर्यटन स्थलों की दीर्घकालीन आर्थिक क्षमता प्रभावित होती है। इन सभी तथ्यों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पर्यटन न तो पूर्णतः लाभकारी है और न ही पूर्णतः हानिकारक। इसका प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि पर्यटन का विकास किस प्रकार की नीतियों और योजनाओं के अंतर्गत किया जाता है। यदि पर्यटन को सतत विकास के सिद्धांतों के अनुरूप, स्थानीय समुदाय की भागीदारी और पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए विकसित किया जाए, तो इसके सकारात्मक प्रभावों को अधिकतम और नकारात्मक प्रभावों को न्यूनतम किया जा सकता है।

अतः भविष्य में पर्यटन को केवल आर्थिक लाभ के साधन के रूप में न देखकर, समावेशी और संतुलित विकास के उपकरण के रूप में अपनाना आवश्यक है। सतत पर्यटन नीतियाँ, आर्थिक विविधीकरण और सामाजिक-पर्यावरणीय संतुलन के माध्यम से ही पर्यटन को दीर्घकालीन आर्थिक समृद्धि का आधार बनाया जा सकता है।

संदर्भ-सूची :

1. Patel, R. & Sharma, A. (2014) : Tourism and regional economic development in India. *The Indian Journal of Economics,* Vol. 95 (376), Pp. 201–215.

2. Seth, P. N. (2015) : Successful Tourism Management. Sterling Publishers Pvt. Ltd., New Delhi. Pp. 89–210.

3. Chakraborty, A. (2010) : Economic impacts of tourism development in India. *Arth Vijnana.* Vol. 52 (1), Pp. 27–41.

4. Das, D. & Mishra, P. (2013) : Tourism and employment generation in India. *Indian Journal of Labour Economics,* Vol. 56 (4), Pp. 633–645.

5. Kreag, G. (2001) : The impacts of tourism. *Tourism Research and Analysis.* University of Minnesota, Pp. 5–18.

6. Rao, V. M. (2011) : Tourism and economic growth in India: An empirical analysis. *Southern Economist,* Vol. 50(3), Pp. 12–17.

7. Singh, S. (2008) : Tourism development and its economic impact in India. *Indian Journal of Regional Science,* Vol. 40 (2), Pp. 45–58.

8. Kumar, M. and Kamra, K. K. (2012) : Basics of Tourism: Theory, Operation and Practice. Kanishka Publishers, New Delhi. Pp. 72–168.